# सामूहिकता एवं आत्मानुशासन

अनेक व्यक्ति जब एक साथ मिलकर किसी कार्य को संपन्न करें तो उस कार्य भावना को सामूहिकता कहते हैं। जैसे एक मकान बनाने में बहुत से व्यक्ति जुटते हैं। वे सभी अपना–अपना काम करते हैं। एक व्यक्ति गारा बनाता है, दूसरा ईंट–पत्थर ढोता है, तीसरा चिनाई करता है। वे सब एक सुव्यवस्थित तरीके से लयबद्ध काम करते हैं। सभी काम को गति मिलती है और मकान संपूर्णता की ओर बढ़ता है। 'काम  की चाल सामूहिकता से ही बनती है।

**समाचार पत्र और सामूहिकता**

सुबह–सुबह पाठकों को दुनिया भर की खबरों से अवगत कराने वाला समाचार पत्र भी अनेक व्यक्तियों एवं विधाओं के सामूहिक प्रयास का परिणाम होता है। समाचार पत्र में सारा काम 'टीम' भावना से करना होता है।

समाचार पत्र में सभी कार्य एक श्रृंखला के रूप में होता है। इस श्रृंखला की अलग–अलग कड़ियां जब आपसी सहयोग और समन्वय से कार्य करती है तभी समाचार पत्र प्रकाशित होकर पाठक तक पहुंचता है। ये कड़ियां परस्पर जुड़ी होती है और इनमें से कहीं पर भी काम रूक जाए तो आगे की प्रक्रिया ठप्प हो जाती है। अतः अखबार में काम करनेवाले को अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान होना चाहिए और टीम भावना से काम करने की आदत डालनी चाहिए।

समाचार पत्र के संदर्भ में सामूहिकता के विभिन्न आयामों को तीन उदाहरणों के माध्यम से समझा जा सकता है।

एक आर्केस्ट्रा में अनेक कलाकार होते हैं। वे सब अपना–अपना वाद्य बजाते हैं जिससे एक कर्ण प्रिय संगीत रचना का जन्म होता है। अगर इनमें से एक भी वादक अपना काम ठीक ढंग से नहीं करे तो स्वर माधुर्य नष्ट हो जाता है।

इस संदर्भ में समाचार पत्र को देखें तो आर्केस्ट्रा की तरह अखबार भी सामूहिक प्रयास का परिणाम होता है। समाचार पत्रों में जो भी सामग्री छापी जाती है उसे जुटाना, छापना और पाठक तक पहुंचाना सरल नहीं होता।

• 'रॉ मटिरियल' यानी शब्द प्रपंच जुटाने से शुरु करके अंतिम वितरण तक का कार्य कुल 24 घंटे या उससे काफी कम समय में पूरा करना होता है। संपूर्ण प्रक्रिया में किसी स्तर पर भी हुई एक मिनट की देरी अनेक पाठकों को उस दिन का समाचार पत्र समय पर उपलब्ध होने से वंचित रख सकती है क्योंकि रेल, हवाई जहाज तो अपने समय से ही चलते है। इसलिए समाचार पत्र संगठन ढांचे को स्वचालित यंत्र की तरह कार्य करने का आदी बनना पड़ता है। अखबार के कार्य में यह संभव ही नहीं है कि पर्यवेक्षण (सुपरवाइजरी) से काम किया जा सके। समाचार पत्र में काम की चाल स्व–प्रेरणा से जुड़े रहने से ही बन सकती है।

सबसे पहले अखबार में छापने के लिए समाचार विज्ञापन एवं अन्य सामग्री का संकलन किया जाता है।

समाचार पत्र से जुड़े सैकड़ों संवाददाता विभिन्न स्थानों से डाक टेलीफोन, तार, फैक्स, टेलेक्स, मोडम व अन्य साधनों से समाचार कार्यालय तक पहुंचाते हैं इसके बाद प्राप्त सामग्री का संपादन किया जाता हैं संपादित सामग्री की कम्पोजिंग होती है। इसमें हुई गलतियों को सुधारा जाता है तत्पश्चात् समाचार पत्र का मुद्रण होता है। समाचार पत्र के विभिन्न स्थानों पर पहुंचने के बाद होकर इन्हें पाठक तक पहुंचाता है।

हर सुबह 6 बजे अखबार पाठक के द्वार पर होता है। समाचार पत्र की जीवन यात्रा 24 घंटे की होती है। अगली सुबह पुनः नए अखबार की आवश्यकता होती है। 24 घंटों में सारा कार्य करना होता है। इसलिए पत्र में प्रत्येक कार्य को पूरा करने के लिए समय निर्धारित होता है। इस तरह एक बड़ी टीम समय के साथ होड में लगी रहती है। यह सारा कार्य आर्केस्ट्रा बजाने जैसा ही है। किसी भी कड़ी में एक मिनट का अंतर पड़ने से पूरा क्रम बिगड़ने का अंदेशा रहता है। प्रत्येक क्षण चाल को बनाये रखना अनिवार्य है। इसलिए समाचार पत्र का हर सहयोगी जिम्मेदारी की भावना से अपने कार्य का निर्वहन करता है।

• पंजाब की एक लोक कथा है – एक बार कुछ मिरासी जंगल से गुजर रहे थे। रास्ते में एक लकड़हारा मिला उसने पूछा भाइयों, तुम कहां जा रहे हो? मिरासियों ने बताया कि वे राजा दिलीप सिंह के दरबार में इस आशा से जा रहे हैं कि उनकी संगीत प्रस्तुति राजा को पसंद आएगी और महाराज प्रसन्न होकर इनाम–इकराम देंगे। लकड़हारे ने कहा, मैं भी आपके साथ चलूंगा। मिासियों ने पूछा, पर तुम बजाओगे क्या? लकड़हारे ने पास पड़ा एक ठूंठ उठाया और कहा मैं इसे बजाऊंगा। बहरहाल लकड़हारा मिरासियों के साथ दरबार में पहुंच गया। मिरासियों ने अपनी प्रस्तुति दी, लकड़हारा भी अपना ठूंठ लिए बैठा रहा और उसने अपने हाव–भाव से यूं जाहिर किया मानो कोई वाद्य बजा रहा है। पर्याप्त इनाम देने के बाद दिलीप सिंह ने लकड़हारे से पूछा, "तुम कौन सा वाद्य बजा रहे थे?" जवाब मिला इसका नाम 'शामिल बाजा' है।

समाचार पत्र के संदर्भ में इस कहानी को देखें तो यह कहा जा सकता है कि यदि आप में इच्छा शक्ति और दल भावना है तो आप समूह में अज्ञानी होते हुए भी चल सकते हैं। साथ ही दल में रहकर आप अपने अज्ञान को दूर कर सकते हैं। यही टीम भावना का लाभ होगा।

समाचारों के लेखन, संपादन और प्रकाशन का प्रत्येक कार्य जिम्मेदारी से करना अनिवार्य है क्योंकि समाचार की विश्वसनीयता समाचार पत्र का मूलभूत तत्व है। इसमें पारस्परिक सद्भाव और विश्वसनीयता अनिवार्य है। पारस्परिक विश्वास का अभाव हो तो समाचार का संपादन असंभव हो जाएगा। या तो गलत समाचार प्रकाशित हो जाएंगे या आपसी मतभेदों में उलझा जाएंगे। समाचार पत्र के हर स्तर पर पारस्परिक मित्र भाव का होना अनिवार्य है।

समाचार पत्र में अन्य उपभोक्ता वस्तु उत्पादक संस्थाओं से एक विशेष अंतर है। समाचार पत्र का रॉ मटिरियल बुद्धि तत्व से निर्मित होता है न कि स्याही और कागज से। शब्दों की उत्पादकता या यचन और उनका सुनियोजित संकलन और संपादन बुद्धि तत्व के अभ्यास पर निर्भर करता है। एक दैनिक

समाचार की प्रस्तुति में जितने शब्दों की जरूरत होती है उसके लिए अनेक बुद्धिवादियों को मिलकर काम करना होता है और एक समरसता का उपादान आयोजित करना होता है। ऐसी समरसता सामूहिक सदाचार से ही पनपती है। यदि सभी साथियों में सहयोगियों से अधिक काम की होड़ नहीं होगी तो सहयोग की भावना नहीं निभा सकती है। अखबार में कार्यरत सहकर्मियों के लिए अपने साथी के प्रति एक अंतरंग सहृदयता की भावना की संरचना का ढांचा निर्मित किए रखना अनिवार्य होता है। इसका सरल उदाहरण यह है कि जो साथी पूर्व की पाली में काम कर रहे है, वे समय से घर जा सकें, यह विशेष चिंता अग्रिम पाली के सहयोगियों में कूट कर भरी रहनी चाहिए। यह तभी संभव होगा जब अग्रिम पाली के सहयोगी पाली के शुरु होने से कुछ पूर्व कार्यालय में पहुंचकर पाली की समस्याओं को समझ लेंगे और जिम्मेदारी सम्हाल लेंगे।

• देश के एक महत्वपूर्ण नेता के भांजे को सिफारिश से एक प्रतिष्ठित समाचार पत्र में नौकरी मिल गई। कुछ साल तक उन्होंने समाचार पत्र के लिए कार्य किया लेकिन वे कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं कर सके। अंततः उन्हें उस संगठन को छोड़ना पड़ा। निष्कर्ष यह है कि समाचार पत्र में काम करने वाला हर सहयोगी स्वयं अपने काम करने के लिए जिम्मेदार है। इसमें कोई किसी का चौकीदार नहीं। अपने काम की चौकीदारी खुद ही करनी होती है। अखबार में अकर्मण्य व्यक्ति नहीं चल सकता। क्योंकि अखबार का नियमित प्रकाशन अनिवार्य है इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को काम तो करना ही पड़ेगा, और जो नहीं करेगा वह लक्षित हो जाएगा।

सामूहिकता के इतने लाभ होने के साथ हानि भी है। सामूहिकता 'अराजकता' को प्रोत्साहित करती है। इससे 'अकर्मण्यता' का माहौल बढ़ता है। सामूहिकता से अनियमितता में भी वृद्धि होती है। सबकी जिम्मेदारी यानी किसी की भी जिम्मेदारी नहीं। एक साथी ने काम में ढील डाली तो दूसरे भी खरबूजे की तरह रंग बदलने लगे, इसलिए सामूहिकता की भावना का आधार आत्मानुशासन पर निर्भर करता है। सहयोग की प्रवृत्ति का विकास स्वधर्म की भावना में ही निहित हो सकता है। यदि स्वधर्म की भावना से रागात्मक संबंध नहीं है तो सहयोग और सामूहिकता कोरे नारे रह जाते हैं। स्वधर्म से उपजी कर्तव्य परायणता अच्छा पत्रकार बनने की पहली शर्त है। जिम्मेदारी की भावना का अभाव हो तो अच्छा पत्रकार बना ही नहीं जा सकता, बेशक आरंभिक दौर में इस भावना का संचार कृत्रिम रूप से ही किया जाय किंतु यह आवश्यक है कि सामूहिकता हमारे स्वभाव में आ जाए।

पत्रकारिता के क्षेत्र में यह भी अनिवार्य है कि मंद गति साथियों को भी साथ लेकर आगे बढ़ा जाए। इसीजिए यह चारित्रिक गुण पैदा करना होता है कि चुगलखोरी, साथियों की निन्दा करना नितांत अस्वभाविक चरीत्र हो। यह गुण विश्वसनीयता के लिए भी अनिवार्य होता है। दूसरे के दोषों को भूलना आदत डाने से आता है। इस आदत का विकास एक अच्छा पत्रकार बनने की प्रक्रिया का अनिवार्य अंग है।